परिशिष्ट –I

संस्थान में वर्ष 2009 के दौरान राजभाषा से सम्बन्धित कार्यकलापों का विवरण

(1) हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14.9.2009 (हिन्दी दिवस) के अन्तर्गत **हिन्दी पखवाड़ा** के कार्यक्रमों का आयोजन दिनांक 14.9.2008 से 28.9.2008 तक निम्नवत विवरण के अनुसार किया गया।

क्रम संख्या	कार्यक्रम	दिनांक
1.	हिन्दी विचार गोष्ठी	14.9.2009
2.	श्रुतलेख प्रतियोगिता	15.9.2009
3.	हिन्दी हस्ताक्षर प्रतियोगिता	16.9.2009
4.	कार्यान्वयन समिति की बैठक	17.9.2009
5.	हिन्दी अनुप्रयोग प्रतियोगिता	18.9.2009
6.	'आओ बताओ इनाम पाओ प्रतियोगिता' (समस्त स्टाफ, महिलाओं एवं बच्चों हेतु)	19.9.2009
7.	'बच्चों की सुलेख प्रतियोगिता	21.9.2009
8.	'हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता'	22.9.2009
9.	'हिन्दी शोध पत्र प्रतियोगिता'	23.9.2009
10.	हिन्दी कार्यशाला	24.9.2009
11.	राजभाषा से सम्बन्धित वृतचित्र/फिल्म का प्रदर्शन (कलमकारी व गौपुरम)	25.9.2009
12.	राजभाषा से सम्बन्धित वृतचित्र/फिल्म का प्रदर्शन (सेतु व हिन्दी गाँधी व गुलामी)	26.9.2009
13.	समापन समारोह	28.9.2009

- दिनांक 14.9.2009 को एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों व आमंत्रित अतिथियों द्वारा **'संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग व बढ़ते कदम एवं सुधार हेतु सुझाव'** पर अपने विचार प्रकट किये गये तथा अन्त में संस्थान के निदेशक द्वारा अपने उद्‌बोधन में हिन्दी को अपने देश की एकता को जोड़ने वाली एक कड़ी तथा पहचान बताते हुए संस्थान के सभी कर्मियों को शत-प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने हेतु आह्वान किया गया।
- दिनांक 15.9.2009 को **हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता** का आयोजन संस्थान के कर्मचारियों, महिलाओं, शोध छात्रों एवं छात्राओं के लिए किया गया जिसमें श्री राजकुमार सिंह, प्रथम, कु. स्वाति चौहान, द्वितीय एवं श्री मानिक पाल, तृतीय स्थान पर रहे।
- दिनांक 16 सितम्बर, 2009 को **हिन्दी हस्ताक्षर प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 135 वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में अपने हस्ताक्षर किये गये तथा मूल्यांकन के पश्चात् सर्वश्रेष्ठ तीन हस्ताक्षर करने वाले श्री निरंजन प्रसाद, श्री लाल सिंह एवं डा0 गोपाल दास क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे।
- दिनांक 18.9.2009 को **हिन्दी अनुप्रयोग प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें डा. अनिल कुमार गोयल, डा. पुनीत कुमार एवं डा0 एस.के. सिंह क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।
- दिनांक 19.9.2009 को **आओ बताओ ईनाम पाओ** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 196 वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, बच्चों एवं महिलाओं ने सहभागिता की। इस

प्रतियोगिता में सहभागिओं से राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित 100 प्रश्न पूछे गये तथा सही उत्तर देने वाले 100 सफल प्रतियोगिओं को तत्काल पुरस्कृत किया गया।

- दिनांक 21.9.2009 को **हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता** का आयोजन **बड़े एवं छोटे बच्चों** के लिए अलग-अलग किया गया। बड़े बच्चों में कु. भारती शर्मा, कु. प्रीति सिंह एवं मि. भास्कर उप्रेती क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे एवं छोटे बच्चों में मि. हिमांशु, कु. नीतू सिंह एवं मि. सत्य प्रकाश शर्मा क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।
- दिनांक 22.9.2009 को संस्थान कर्मचारियों के लिए **हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें श्री दीपक द्विवेदी, डा. खुश्याल सिंह एवं डा. गोपाल दास क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।
- दिनांक 23.9.2009 को संस्थान के वैज्ञानिकों, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारियों एवं शोध छात्र एवं छात्राओं के लिए एक **हिन्दी शोध पत्र प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। वैज्ञानिक एवं तकनीकी वर्ग में डा0 अनिल कुमार गोयल, डा0 बृजमोहन क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर रहे तथा शोध छात्र /छात्रा वर्ग में कु0 स्वाती चौहान, श्री दीपक द्विवेदी एवं कु0 पूजा गोयल क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं।
- दिनांक 24.09.2009 को **राजभाषा कार्यशाला** का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता निभायी जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), आगरा के सह-सचिव प्रो. (डा.) रघुवीर शरण तिवारी द्वारा **राजभाषा अधिनियम व हिन्दी की विकास यात्रा** पर एक व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 25.9.2009 एवं 26.9.2009 को राजभाषा से सम्बन्धित **वृत्तचित्र कलमकारी, हिन्दी गांधी और गुलामी, सेतु व गौपुरम** का चलचित्र प्रदर्शन समस्त कर्मचारियों के लिए किया गया।
- दिनांक 14 सितम्बर, 2009 से प्रारम्भ हुए इस हिन्दी पखवाड़े का दिनांक 28 सितम्बर, 2009 को समस्त सफल प्रतियोगियों को संस्थान निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कार वितरण के साथ ही समापन हो गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी भी देश की एकता एवं विकास के लिए उस देश की राष्ट्रभाषा का समृद्ध होना अति आवश्यक है। अतः हम सभी का कर्तव्य है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के लिए हर सम्भव प्रयास करें तथा संस्थान मे निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप हिन्दी में कार्य करते हुए हिन्दी के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाना सुनिश्चित करें। हमेशा याद रखें कि दैनिक व्यवहार में हिन्दी भाषा का प्रयोग हीनता नहीं बल्कि गौरव का प्रतीक है। जैसा कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी पहले भारतीय थे जिन्होने संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिन्दी में भाषण देकर सभी को चौंका दिया था। उनके इस कार्य की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। ऐसे लोग जो अपनी संकीर्ण पृथक्कतावादी भावनाओं का प्रदर्शन करके हिन्दी का विरोध करते हैं, उन्हें भी अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना चाहिए तथा राष्ट्रीय सम्मान के लिए संकुचित मनोवृत्ति का परित्याग कर हिन्दी को अपनाना चाहिए। कार्यक्रम के अन्त में निदेशक महोदय ने कहा कि हम सब इस अवसर पर मिलकर प्रतिज्ञा करें कि राजभाषा हिन्दी के प्रति हम अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोंडेगे तथा हम अपने-अपने कार्यक्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग करके आम जनता को बकरी पालकों किसानों की भलीभांति सेवा कर सकेंगे ताकि राजभाषा हिन्दी जन-जन की भाषा बनकर देश की प्रगति में योगदान दे सके।

(2) संस्थान समाचार पत्र अजामुख का प्रकाशन

संस्थान में एक **त्रैमासिक** हिन्दी समाचार पत्र **'अजामुख'** नियमित रूप से प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें हिन्दी में बकरी पालन व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं एवं क्षेत्रों जैसे बकरी प्रजनन, आनुवांशिकी, स्वास्थ्य, आवास प्रबन्धन, जनन, पोषण, चारा स्रोत एवं उत्पाद प्रौद्योगिकी, परियोजना निर्माण तथा बकरी पालन व्यवसाय इत्यादि पर सरल एवं सुगम भाषा में वैज्ञानिकों के लेख प्रकाशित किये जाते हैं। इस पत्रिका को समस्त प्रशिक्षण प्राप्त बकरी पालकों, संस्थानों, विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों व गैर सरकारी संगठनों को नियमित रूप से उपलब्ध कराया जा रहा है जिसके माध्यम से ज्ञान अर्जित करते हुए ग्रामीण किसान व बकरी पालक लाभान्वित हो रहे हैं।

(3) फोल्डर/बुलेटिन/पैम्फलैट का प्रकाशन

संस्थान में सरल व सुगम हिन्दी भाषा में बकरी पालन के विभिन्न क्षेत्रों में किये गये नवीन अनुसंधान तकनीकों पर आधारित **15 फोल्डर्स** प्रकाशित किये गये हैं जिनको संस्थान में भ्रमण पर तथा संस्थान द्वारा आयोजित व्यावसायिक बकरी पालन प्रशिक्षण में सहभागी किसानों, बकरी पालकों, शिक्षित बेरोजगारों, व्यवसायियों इत्यादि को उपलब्ध कराया जा रहा है जो कि अन्ततः बकरी पालन व्यवसाय को बढ़ावा देने में सार्थक सिद्ध होगा।

(4) संस्थान द्वारा बकरी पालन व्यवसाय की नवीनतम अनुसंधान तकनीकों पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन

संस्थान द्वारा बकरी पालन व्यवसाय को ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ावा देने के उद्देश्य से **सात पुस्तकें 'व्यवसायिक बकरी पालन, बकरी पालन की एक झलक, बकरी पालन के प्रयोगात्मक पहलू (पैकेज ऑफ प्रेक्टीसिस), कृषक बकरी पालन एवं व्यवसायिक बकरी पालक, जोन्स रोगः पशु एवं जन स्वास्थ्य में महत्व, उन्नत बकरी पालन (नस्ल, पोषण, प्रबन्धन, चिकित्सा एवं विपणन) एवं बकरी पालन के आवश्यक पहलू'** का हिन्दी में प्रकाशन किया गया है तथा ऐसी आशा की जाती है कि ये पुस्तकें वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों के ज्ञान एवं दक्षता में वृद्धि एवं बकरी पालक व्यवसायिओं को अपने व्यवसाय को वैज्ञानिक आधार पर करते हुए लाभान्वित करने में सहायक सिद्ध होगी।

(5) व्यावसायिक बकरी पालन पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण का आयोजन

संस्थान में बकरी पालकों को बकरी पालन व्यवसाय पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान व्यावसायिक बकरी पालन पर चार (17-26 फरवरी, 2009, 21-30 मई, 2009, 26 अगस्त-04 सितम्बर, 2009 व 10-19 नवम्बर, 2009) राष्ट्रीय प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिसमें वर्ष 2009 के दौरान देश के विभिन्न राज्यों से 255 प्रशिक्षणार्थियों ने सहभागिता की। इस प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों व वरिष्ठ तकनीकी अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिन्दी में व्याख्यान, प्रदर्शन, प्रयोगात्मक प्रशिक्षण व भ्रमण के माध्यम से बकरी पालन से सम्बन्धित विभिन्न आधुनिक अनुसंधान तकनीकों के बारे में सहभागियों को जानकारी प्रदान की गई तथा उन्हें प्रेरणा लेते हुए अपना बकरी पालन व्यवसाय आरम्भ करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

(6) रेडियो कृषि पाठ्शाला (फार्म स्कूल आन एयर)

- संस्थान द्वारा किसानों को बकरी पालन व्यवसाय अपनाने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 5 दिसम्बर 2008 से 9 जुलाई 2009 की अवधि के दौरान एक कृषक रेडियो पाठशाला का आयोजन आकाशवाणी, मथुरा-वृन्दावन की सहायता से किया गया जिसमें उन्नत बकरी पालन व्यवसाय हेतु संस्थान द्वारा विकसित की गयी नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों से सम्बन्धित 30 कड़ियों का प्रसारण संस्थान के 30 वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। इन प्रसारणों के अन्त में प्रत्येक कड़ी में प्रसारण से सम्बन्धित तीन प्रश्न पूछे गये, जिनका उत्तर बकरी पालक किसानों के द्वारा लिखित रूप में डाक द्वारा संस्थान को भेजा गया। इस प्रक्रिया में 62 बकरी पालकों ने सहभागिता की इसमें उत्तर-प्रदेश से 57 (मथुरा से 45, हाथरस से 10 तथा अलीगढ़ से 02) तथा राजस्थान के भरतपुर जनपद से 05 किसानों ने भाग लिया तथा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखित रूप में संस्थान में भेजे जिनका मूल्याकंन करने के पश्चात् कुल 12 किसानों को पुरस्कृत किया गया। इसमें चन्द्रशेखर सारस्वत पुत्र श्री स्व. प्यारे लाल सारस्वत गांव टलीपुर, डाकखाना-हयातपुर मथुरा उ.प्र. को रू. 5000.00 का प्रथम पुरस्कार, श्री नेत्रपाल सिंह लोधा पुत्र श्री हुकम सिंह लोधा गांव-सितार, पोस्ट-पला जिला-भरतपुर (राज.), श्री हुकम सिंह लोधा पुत्र श्री रामलाल लोधा, गांव-सितार, पोस्ट-पला जिला-भरतपुर (राज.) को रू. 1500.00 को द्वितीय पुरस्कार, श्री जबाहर सिंह चाहर पुत्र श्री सामलिया, गांव-नगला चाटान (सकराया), पोस्ट-जैंत, जिला-मथुरा उ.प्र., को रू. 2000.00, एवं श्री विजय सिंह पुत्र श्री राम किशन गांव व पोस्ट-कूम्हा, द्वारा सेवर, जिला-भरतपुर (राज.), श्री राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री नेत्रपाल सिंह, गांव व पोस्ट-बन्दी जिला-मथुरा उ.प्र., श्री राजवरी सिंह पुत्र श्री हरदेव सिंह गांव-हकीमपुर पोस्ट-जुनसटी, जिला-मथुरा उ.प्र., श्री योगेन्द्र कुमार माहुरे पुत्र श्री राजवीर सिंह, गांव-हकीमपुर पोस्ट-जुनसटी, जिला-मथुरा उ.प्र, श्री राजेश कुमार पुत्र श्री अजय सिंह (नगला वाले) गांव व पोस्ट-कूम्हां, द्वारा सेवर, भरतपुर (राज.), श्री गोपाल प्रसाद बघेल पुत्र श्री बोधन सिंह बघेल गांव-राजपुर पोस्ट-वृन्दावन, जिला-मथुरा उ.प्र., श्री कोमल सिंह पुत्र श्री विजेन्द्र सिंह गांव व पोस्ट-उसपार, मथुरा उ.प्र., श्री विजय सिंह प्रजापति गांव-गुरसौटी, पोस्ट-कुरसन्डा जिला-हाथरस उ.प्र. आदि प्रत्येक को रू. 1000.00 का सानत्वना पुरस्कार दिया गया। डा. आर.एम. आचार्या, भूतपूर्व उप-महानिदेशक (पशु विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा किसानों को पुरस्कार वितरित किये गये।

(8) संस्थान की हेल्पलाइन के माध्यम से पशु पालक किसानों की समस्याओं का समाधान

- संस्थान द्वारा बकरी पालक किसानों की विभिन्न समस्याओं के त्वरित निवारण हेतु प्रारम्भ की हेल्पलाइन (दूरभाष संख्या 0565-2763320) की सहायता से वर्ष-2009 के दौरान बकरी पालन व्यवसाय से सम्बन्धित विभिन्न **3380 प्रश्नों/समस्याओं** का समाधान किया गया। उल्लेखनीय है कि इस हैल्प लाइन के अन्तर्गत किसानों द्वारा बकरी पालन से सम्बन्धित पूछे गये प्रश्नों का उत्तर संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तत्काल दूरभाष के माध्यम से राजभाषा हिन्दी में प्रदान किया जाता है।

(9) बकरी पालक किसानों द्वारा भ्रमण

- संस्थान में विभिन्न संस्थाओं जैसे कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रायोजित किसान भ्रमण कार्यक्रमों के अन्तर्गत आने वाले 1352 बकरी पालक किसानों को वैज्ञानिकों द्वारा राजभाषा हिन्दी में संस्थान की बकरी पालन से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों व नवीनतम अनुसंधान तकनीकों के विषय में जानकारी प्रदान की गई।

(10) राजभाषा प्रभावी क्रियान्वयन के अन्तर्गत अन्य गतिविधियाँ

- संस्थान परिसर में विभिन्न स्थानों पर संस्थान द्वारा विकसित की गई अनुसंधान सम्बन्धी तकनीकों/गतिविधियों **राजभाषा हिन्दी में** तैयार कराये गये डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से प्रदर्शन किया गया है तथा संस्थान में आने वाले बकरी पालक किसानों को सरल एवं सुगम हिन्दी भाषा के माध्यम से वांछित जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है।
- संस्थान में आयोजित की गई **चार हिन्दी कार्यशालाओं** में संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारियों एवं प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारियों को विषय संघ की राजभाषा नीति, नियम एवं प्रावधान, प्रशासनिक शब्दावली एवं अनुवाद, राजभाषा एवं हिन्दी संरचना से सम्बन्धित त्रुटियां व उपाय एवं हिन्दी भाषा व उसकी प्रयोगशीलता के विषय में प्रबुद्ध व्याख्यान कर्ता डा. रघुवीर शरण तिवारी, प्राध्यापक एवं सह-सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति, आगरा, श्री राजीव वार्ष्णेय, उप-प्रबन्धक (राजभाषा) सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, आगरा, डा0 बी0 एस0 सोलंकी, विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा एवं डा0 अनिल गहलौत, व्याख्याता, किशोरी रमण डिग्री कालेज, मथुरा, द्वारा व्याख्यान दिये गये। इन कार्यशालाओं में संस्थान के कुल 141 वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सफलता पूर्वक सहभागिता की।
- संस्थान में दैनिक प्रयोग में आने वाले समस्त विभागीय प्रपत्र (प्रोफार्मा) जैसे अर्जित अवकाश, आकस्मिक अवकाश, कार्य आरम्भ रिपोर्ट, प्रस्थान रिपोर्ट, वाहन मांग पत्र, भण्डार मांग पत्र, तथा समस्त रजिस्टर, अनुबन्ध पत्र, निविदा पत्र व फाइलें इत्यादि **द्विभाषी** अथवा प्रकाशित कर विभागीय कार्य हेतु उपलब्ध करा दी गई हैं तथा उनमें अधिकांशतः हिन्दी में कार्य सम्पादित किया जा रहा है।
- संस्थान में समस्त सूचना पट, संकेतक, नाम पट्टिकाऐं, मुहरें इत्यादि **द्विभाषी** करा दी गई हैं।
- संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य करने हेतु रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से राजभाषा अनुभाग द्वारा स्वागत-पटल पर लगाये गये सूचना पट पर प्रतिदिन एक नया हिन्दी का शब्द एवं राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने वाली तथा ज्ञानवर्धक सूक्तियाँ, कविताऐं व दोहे नियमित रूप से लिखे जा रहे हैं।
- संस्थान भ्रमण के दौरान आने वाले वैज्ञानिकों, प्रसार अधिकारियों, व्यवसायियों व बकरी पालक किसानों को संस्थान की अनुसंधान से सम्बन्धित परियोजनाओं, गतिविधियों, उपलब्धियों व नवीन अनुसंधान तकनीकों के विषय में सुलभ जानकारी सुगमता से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पिछले 30 वर्षों की जानकारी को विस्तार पूर्वक **द्विभाषी रूप** में प्रदर्शित किया गया है।
- संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी के प्रशिक्षण हेतु **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति** (नराकास), मथुरा रिफायनरी, मथुरा में कार्यशाला सहभागिता हेतु भेजा गया।
- संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को **अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी** में करने के उद्देश्य से निदेशक द्वारा हस्ताक्षरित अक्षरशः आदेश जारी किये गये हैं।

- संस्थान के प्रसार शिक्षा एवं सामाजिक अर्थशास्त्र अनुभाग को अपना शत–प्रतिशत कार्य **राजभाषा हिन्दी में** सम्पादित करने हेतु निदेशक महोदय द्वारा आदेशित/नामित किया गया है।
- संस्थान के 15 विभागों/अनुभागों में प्रत्येक से 2 से 4 कर्मचारियों को अपना शत–प्रतिशत कार्य राजभाषा हिन्दी में सम्पादित करने हेतु निदेशक महोदय द्वारा अक्षरशः आदेश जारी किये गये हैं।
- उत्तर प्रदेश सरकार में कार्यरत पशुधन प्रसार अधिकारियों व पशु चिकित्साधिकारियों के लिये भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा प्रायोजित एस्कैड योजना के अन्तर्गत पशु रोगों के निदान एवं नियत्रंण पर प्रशिक्षण संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा द्विभाषी रूप में प्रदान किया गया।
- संस्थान के पुस्तकालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कुल **125** राजभाषा हिन्दी की वैज्ञानिक, साहित्यक, सामाजिक व मनोरंजक पुस्तकें क्रय करते हुए पाठकों हेतु उपलब्ध कराई गयी हैं जिससे कि आम लोगों की राजभाषा हिन्दी के प्रति रूचि जागृत हो सके।

....